What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 37	8/2015-16	MONTHLY	February 2015

- **Celebration of Indian Republic Day.**

At Arya Samaj Bhavan

On Sunday 1st February 2015

From 11am to 1.30pm

(Please see page 21 for detailed information)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (|OFF ERSKINE STREET)
NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

The Ultimate Protection from all Dangers	**Krishan Chopra**	**3**
सँस्कार-भाग-१०	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**5**
अध्यात्म के शिखर पर-१७	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**11**
अपनी सँस्कृति अपनाओ		**13**
The 10 Principles of Arya Samaj		**16**
Hall Hire Advert		**17**
Cost for our services		**18**
Matrimonial Advert		**19**
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)		**20**
Indian Republic Day Celebration		**21**
News (पारिवारिक समाचार)		**22**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays - Closed
Tel. 0121 359 7727

The Ultimate Protection from all Dangers

स घा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पति: ।

सोमो हिनोति मर्त्यम् । ऋग्वेद १.१८.४

Sa ghaa veero na rishyati yamindro Brahmanaspatih l
Somo hinoti martyam ll Rig Veda 1.18.4

Meaning in Text Order

Sah = he
Veerah = brave person
Na = never
Rishyate = meet destruction
Yum = whom
Indarah = master of all power and possessions
Brahmanaspati = Lord of divine glory
Somah = the master of tranquility and peace
Hinoti = protects
Martyam = mortal being.

Meaning

The brave man who is protected by Indra, Brahmanaspati and Soma never meet destruction i.e those who adhere the divine qualities of such kind they are always protected.

Contemplation

Are we brave enough, do we have the confidence to go through the difficult journey of life, are we sure that we will not be destroyed or suffer heavy losses or total destruction by our enemies? Is there any possibility that at the time of adversity, our confidence will be proven to be untrue, the pain will smolder in our heart and we cry that we are defeated and have lost every thing , we feel like a broken man defeated and dejected in the life?

If there is a slightest doubt in your mind and your mind says that there is a difficult time ahead and it is hard for you to escape the misery and you cannot save yourself from destruction then here is an open invitation to understand the path of the Vedas for your protection.

Protection is a great magical and meaningful word. A lot is hidden into it. It can be protection of conscious, materialistic protection, individual protection,., national protection so on and so forth. A person is destroyed at every step, sometimes destroyed through lack of character, destroyed by unrighteous character, deprived of wealth, looses his integrity. It will be a great achievement to protect ourselves from destruction.

Indra is the representative of forwardness, bravery, steadfastness, destroying of enemies and the master of prosperity. Brahmnaspati represents knowledge, superiority, vastness, wisdom and divine glory. Soma represents tranquility, harmony, creativity, virtuous inspirations. These qualities are symbol of existence of God.. When these qualities of God will engage in our progress then there is no power in this world which can defeat us. If we will not take this message from divine power then our external and internal enemies will defeat and destroy us.

By Krishan Chopra

सँस्कार-भाग-१०

आचार्य डॉ. उमेश यादव

जातकर्म सँस्कार- जातकर्म सँस्कार एक ऐसा सँस्कार है जो जन्मपूर्व और जन्मोत्तर सँस्कारों को जोड़ रहा है । यह चौथा सँस्कार है और इसका समय शास्त्रीय तौर पर १०वाँ मास है । नौ मास के पश्चात्नौ दिन हो जाने पर १० चन्द्रमास बन जाता है क्योंकि सामान्यतया २८० दिन मान्य है जो एक चन्द्र मास के २८ दिन मान्य होने से इसमें १० चन्द्रमास पूरे हो जाते हैं । ३० दिन के मास गणना करने पर नौ मास १० दिन बनते हैं । जो बच्चा इतना समय पूरा लेकर जन्म लेता है वह उचित रुपेण स्वस्थ व विकसित समझा जाता है, पर जो पूर्व ही जन्म ले लेते हैं, वे थोड़ा कमजोर या किसी तरह का अपरिपक्व माने जाते हैं । ऐसी अवस्था को ठीक करने के लिये आज कल मेडिकल सुविधायें पूर्णतया उपलब्ध हैं । ऐसे बच्चों को किसी खाश सुरक्षा में रखकर उसके समुचित विकास हेतु उपरोक्त काल पूरा किया जाता है । जब डॉक्टर आस्वस्थ हो जाते हैं तब वे बच्चे को खाश अवस्था से अलग कर सामान्य अवस्था में रखते हैं फिर माँ समेत बच्चे को घर भेजा जाता है । आगे हम इसकी एक-एक विधि से विशेष जानकारी लें-

१. जल-सिंचन- अर्थात्जलवायु के अनुसार प्रसविता नारी पर जल का सिंचन करना- मंत्र पाठ के साथ मंत्र-पद "एजतु" के भावानुसार पति गर्भ के लिये जरायु सहित नीचे आने की प्रार्थना करता है, साथ ही प्रसविता नारी के शरीर और मुख भाग पर जल के सिंचन से हल्का स्नान करवाता है । सर्दी में स्नानयोग्य गर्म जल और ग्रीष्म ऋतु में शितोष्ण जल का

प्रयोग उचित है । प्रसव-काल में प्रसविता को हल्का ठंड लगकर कंपन जैसा महसुस होने लगता है । ऐसी अवस्था को स्थिर करने हेतु ही अनुकूल तापमान का जल लेना उचित है । तात्कालिक पीड़ा थोड़ा कम करने में भी यह कार्य सहायक प्रतीत होता है । पति द्वारा यह कार्य होने पर पत्नी मनोवैज्ञानिक तौर पर थोड़ा आसान महसुस करती हुयी दर्द को सह लेती है ।

२. नाल काटना- बच्चे की नाभि के साथ जुड़ी नाड़ी को काटा जाता है । यह एक लम्बी नाड़ी होती है जो माँ की जरायु-नाड़ी से जुड़ी होती है । सुश्रूत (शारीर १०/१२) में लिखा है-" नाभिनाड़ीम्ष्टाँगलीमायम्य सूत्रेण बद्ध्वा छेदयेत्"- नाभि से जुड़ी नाड़ी को नाभि से आठ अँगुल नापकर धागे से बान्धकर काटें । कहीं पर एक बीत्ता भी कहा है क्योंकि एक बीत्ता में आठ अँगुल ही होते हैं । चरक ८/७३ के अनुसार एक बालिश्त है । इसमें भी आठ अँगुल ही होते हैं । नाभि से जुड़ी यह बीत्ता भर नाड़ी धीरे-धीरे सुखकर स्वयं झड़ जाती है और बच्चे की नाभि अपनी स्वाभाविक स्वस्थ अवस्था में आ जाती है ।

३. जीह्वा पर "ओ३म्" लिखना-विद्वान्गृहस्थ पुरोहित जो सँस्कारों को सम्पन्न करवाने में निपुण हो; के द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ यह सँस्कार सम्पन्न करवाया जाता है । बच्चे के पिता द्वारा बच्चे की जीह्वा पर सोने की शलाका से मधु व घी मिश्रित घोल के साथ विधिवत् "ओ३म्" शब्द लिखने की प्रक्रिया है । मधु अधिक और घृत थोड़ा के अनुपात से मिश्रित घोल तैयार किया जाता है । वस्तुत: घी और शहद का विषम मात्रा में मिश्रण एक औषधि है जो बच्चे को जीह्वा या मुख विकार से बचाती है

। ध्यान देने योग्य यह बात है कि शहद और घृत का मिश्रण में शहद अधिक और घृत बहुत कम हो तो यह एक अच्छी औषधि है पर दोनों की वराबर मात्रा हो जाने पर यह विषैला बन जाता है । अत: निश्चित ही इसका ज्ञान हर माता-पिता और पुरोहित को होना चाहिये । आजकल शहद और घी भी शुद्ध नहीं मिलता, हमें इसका भी ध्यान रखना है । अशुद्ध शहद और अशुद्ध घी का मिश्रण नुकसान पहुँचा सकता है । सोने का शलाका भी एक औषधि रुप ही सिद्ध है । स्वर्ण, शहद और घी तीनों मिलकर बच्चे के जिह्वा, मुख व कंठ के विकारों को दूर करते हैं, साथ ही इससे जीह्वा पर मधुरता का सँस्कार पड़ने से बच्चे को मधुरता का ज्ञान होता है । ओ३म-लेखन द्वारा प्रारम्भ में ही बच्चे पर आस्तिकता का प्रबल सँस्कार डलने का प्रयास है क्योंकि ओ३म्परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम मान्य है । उपयुक्त पदार्थों के कुछ और भी गुण जानिये । घृत से मिरगी-शूल, ज्वर-नाशन, वायु-पित-शमन होता है । शहद से मधुरता, जठराग्नि-वर्द्धन, बल-वर्द्धन, शरीर का स्वस्थ और सुडौल होना आदि सम्भावित है । स्वर्ण से वीर्य, मेधा, आयु, स्मृति आदि का वर्द्धन होता है । स्वर्ण भी शुद्ध हो । अँगुलि से मिश्रण कभी न चटायें क्योंकि सावधानी वर्त्तने पर भी अँगुलि में दोष सम्भावित है । ओ३म्अक्षर लिखकर पिता द्वारा कान में " वेदोऽसि" कहा जाता है । इसका अर्थ है कि तुम्हरा गुप्त नाम वेद है । वेद के चार विशेष अर्थ मान्य हैं-ज्ञान, विचार, सत्ता व लाभ । इन चारों अर्थों के अनुसार भावों का सँस्कार डालना अभिप्राय है । ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म व ईश्वर के प्रति श्रद्धा का सँस्कार शुरु से ही बच्चे में बना रहे जिससे जीवन में सुख पाये; यही उद्देश्य है ।

४.प्रसव-पीड़ा- प्राय: यह देखा जाता है कि जो गर्भिणी घर के काम-काज में

प्रसन्नता के साथ लगी रहती है; वह बड़ी सरलता से प्रसव करती है । गर्भस्थ बच्चे को नीचे सरकने में कष्ट तो होगा ही पर श्रम-साधिका नारियाँ अपने प्रसव-काल में सहजता से थोड़ा कष्ट का ही अनुभव करती हुयी बाजी मार जाती है । जंगल आदि में काम करने वाली स्त्रियाँ तो कई वार चलते-फिरते हँसते-हँसते प्रसव कर देती हैं लेकिन यह देखा जाता है कि शहर की प्रसूता नारी काफी कठिनाई या दर्द का सामना करती है । कारण कि शहर में आराम की जिन्दगी होती है फलत: उचित व्यायाम का अभाव हो जाता है । कई वार उन्हें बड़ा ऑपरेशन करना पड़ता है । इसलिये यह आवश्यक है कि गर्भिणी स्त्री उचित मात्रा में व्यायाम, चलना-फिरना, झाड़ू-पोचा, थोड़ा-बहुत रसोई का काम-काज आदि अवश्य करती रहे पर प्रसन्नतापूर्वक न कि किसी दबाव में । ऐसा करना उसे सुखद प्रसव (नार्मल डिलिवरी) में निश्चित ही अनुकूलता प्राप्त होगी ।

५.सिर-सूँघना- सिर सूँघना प्यार और आशीर्वाद जताने के लिये सर्वथा उचित है । पिता बच्चे का सिर सूँघता है और भरपूर प्यार व आशीष देता है कि हमारा प्यारा बच्चा युग-युग जीये; सर्वथा स्वस्थ रहे । यह वैदिक प्रथा रामायण और महाभारत काल में भी सुप्रसिद्ध थी । जब बच्चे बड़ों के सामने झूकते और चरण छूते तो बड़े उन्हें माथा सूँघकर या सिर पर हाथ फेर कर प्यार व आशीर्वाद जताते थे । आजकल गाल या ओष्ठ आदि को चूमने या हाथ से छूने का प्रचलन चल पड़ा है जो अवैदिक है । चूमने या हाथ लगाने में थूक के विषैले परमाणु या हाथ के मल आदि के गन्दे दोषपूण परमाणु से अगले व्यक्ति को रोगग्रस्त कर सकते हैं । अत: यह अवैज्ञानिक और अनुचित है । माथा सूँघना या गले मिलना फिर भी उचित है । गले मिलने में भी बीच में कपड़े आते हैं जिससे संक्रामक रोग से

सुरक्षा बनी रहती है ।

६.स्तन-पान- प्रसुता माँ बच्चों का भोजन अपने स्तनों में लेकर आती है । स्तनों को स्वच्छ रखने तथा बच्चे को स्तन-पान कराने से माँ की ममता और बच्चे का शुद्ध भोजन दोनों तृप्त होते हैं । प्रभु की कृपा देखें-जन्म लेते ही भोजन हेतु बच्चे को कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ता । माता का दूध ही बच्चे के शरीर की पूर्ण पुष्टि हेतु सर्वोत्तम है । आयुर्वेद में ठीक ही कहा है-" मातुरेव पिवेत्स्तन्यं तत्परं देहवृधये ।" जननी का दूध ही बच्चे के लिये सबसे पुष्टिकारक भोजन है । निवेदन है कि बच्चे को प्रारम्भ में स्तन-पान अवश्य करायें । कुछ स्त्रियाँ अपनी सुन्दरता नष्ट होने के डर से स्तन-पान नहीं करातीं पर यह नासमझी है । यह तो बच्चे का नैसर्गिक हक है । अब तो आधुनिक डॉक्टर भी कहने लगे हैं कि प्रसुता बच्चे को दूध अवश्य पिलाये क्योंकि यह देखा गया है कि जो बच्चा शुरू से माँ का दूध अधिक देर तक पीता है उसे पूरा पोषण मिलता है; वह प्राय: पोलियो आदि बिमारियों से बचा रहता है ।

७.जल-पूर्ण कलश रखना-प्रसुता स्त्री जिस कमरे में रहती है, वहाँ उसके सिर-भाग में एक जलपूर्ण कलश रख दिया जाता है । इससे प्रदूषित वायु को जल में शोशित हो जाने से घर को शुद्ध रखने में मदद मिलती है । घर के लोग सदैव ध्यान रखते है कि कलश में पर्याप्त जल बना रहे ताकि विकृत वायु को शोशित करने में वह कम न पड़े । सिर भाग में कलश रखने से प्रसूता का मस्तिष्क शीतल व शान्त रहता है । सिर ही तो सब ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, मस्तिष्क आदि का आधार है; जलपूर्ण कलश से सारी इन्द्रियाँ, मन व मस्तिष्क सब को शीतल व शान्त रखने का अतीव

वैज्ञानिक सहज व सरल उपाय है ।

८.सरसों की आहुति-जिस घर में प्रसूता माँ व बच्चे को रखा जाता है उस घर में बच्चे के जन्म के बाद न्युनतम दस दिनों तक पीली सरसों की आहुतिपूर्वक प्रात: सायं हवन करने का निर्देश है । आयुर्वेद में सरसों को खाज नाशक व सिरोविरोचन (सिर के बलगम को निकालने वाला) बताया गया है । सरसों के तेल को कड़वा, गर्म, रक्तपित्तनाशक, कफनाशक, वायु विकार को हरने वाला, खुजली, कुष्ट आदि त्वचा के रोगों से वचाने वाला कहा गया है । इस कारण भात और सरसों को मिलाकर आहुतियाँ देने का भी विधान है । भात वीर्यवर्द्धक पौष्टिक आहार है । पीली सरसों स्वयं में एक विशेष औषधि है । आहुति से इनकी सुगन्धि प्रसूता स्त्री के घ्राण/नासिका-द्वार द्वारा भीतर जाती है जो सभी प्रकार से प्रसूता नारी को स्वस्थ रखती है । अन्दर-बाहर सब प्रकार की नुकसानदेय मलादि उत्पन्न दुर्गन्धि व क्रीमियों को नष्ट कर वातावरण को स्वच्छ रखने में मदद करती है । आज भी कई क्षेत्रों में सरसों व अरण्डी के तेल से कम से कम दस दिनों तक प्रसूता माँ व बच्चे के घर में दीपक जलाकर रखा जाता है । आयुर्वेद के अनुसार अरण्डी की आहुति व दीपक जलाना भी उचित ही है ।

इस प्रकार जातकर्म सँस्कार के माध्यम से मंत्रों द्वारा प्रार्थना एवं विधिगत क्रियाओं से हम सदैव एक होनहार, दीर्घायु, स्वस्थ, मेधावी व सँस्कारित गुणी संतान की कामना के साथ सम्पूर्ण घर को भी शुद्ध रखने का प्रयास करते हैं ।

अध्यात्म के शिखर पर-१७

आचार्य डॉ. उमेश यादव

परमात्मा सर्व न्याययुक्त है । वह सदा पक्षपातरहित होकर काम करता है । इस कारण वह किसी के पाप को माँफ नहीं करता है और किसी के पुण्य को नष्ट नहीं करता । पाप का फल दु:ख और पुण्य का फल सुख सबको ही निष्पक्ष भाव से देता है , चाहे कोई परमात्मा का भक्त ही क्यों न हो; अगर उसने पाप किया है तो उसे उसका किये का फल अवश्य ही मिलेगा । अगर वह पाप का फल क्षमा कर दे तो दुनियाँ में पाप और ही बढ़ेगा फिर कोई किसी से कभी डरेगा भी नहीं । एक राजा को भी ऐसा ही करना चाहिये ताकि न्याय से प्रजा सदा डरा करे जिससे पापमूलक अपराध जीवन में कभी न करे । स्वच्छ व स्वस्थ समाज व राष्ट्र बनाने हेतु एक सक्षम न्याय व्यवस्था की महती आवश्यकता है । इस दुनियाँ के सब व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को सदा स्वस्थ व स्वच्छ रहने के लिये ही परमपिता परमेश्वर ने अग्नि, वायु आदित्य और अँगिरा इन चार आदि ऋषियों को सृष्टि के प्रारम्भ में ही क्रमश: ऋग, यजु: साम और अथर्ववेद का पवित्र ज्ञान दिया ।

कालान्तर में वेद ज्ञान के विस्तार हेतु ही अन्य ग्रन्थ जैसे ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण, गृह्य सूत्र, मनुस्मृति रामायण, महाभारत आदि सब लिखे गये ताकि सर्व साधारण मनुष्यों को अध्यात्म का सही-सही ज्ञान हो सके; पाप और पुण्य को यथार्थत: समझ सके तथा पाप से बचे और पुण्य को अपनाये । अर्थात्तदनुरुप कर्म कर सके क्योंकि पाप और पुण्य तो अन्तिमरुप से कर्मफल ही हैं । इस तरह की नैतिकता को ही मूलरुप

से वेदों में बतलाया है ।

समाज, राष्ट्र व संसार को श्रेष्ठ बनाने के लिये व्यक्ति-व्यक्ति को सुधारना ही सही मार्ग है । समाज, राष्ट्र व संसार के लोग व्यक्तियों के समुदाय ही तो हैं । हर व्यक्ति अपना कर्म करता है; अपने कर्म करने में स्वतन्त्र है । व्याकरणसूर्य पाणीनि जी ने अष्टाध्यायी में एक सूत्र ठीक ही लिखा है-"स्वतन्त्र: कर्त्ता" -अर्थात्जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है अत: वह अपनी क्रिया का कर्त्ता कहलाता है ।

यह विचारणीय है कि परमात्मा भी कर्त्ता है पर वह अपने कर्मों के लिये कर्त्ता है और जीवात्मा अपने कर्मों के लिये कर्त्ता है । ये दोनों कर्त्ता अपने-अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी हैं । जीवात्मा का कार्य परमात्मा नहीं कर सकता और परमात्मा का कार्य जीवात्मा नहीं कर सकता । निश्चित ही दोनों का कार्यक्षेत्र पृथक्पृथक्है । उदाहरण- परमात्मा सृष्टि की रचना करके उसका पालन-पोषण करता है और जरूरत पड़ने पर उसका संहार भी करता है । साथ ही सब जीवों के पाप-पुण्य का कर्मफल-दाता है क्योंकि वही सर्वज्ञ होने के कारण पूर्णतया सत्य निर्णायक है तथा सर्वत्र होने के कारण सबको अपने ज्ञानचक्षु से यथावत्देखता हुआ सब कुछ समझता है कि कौन जीव कहाँ, कब, क्या और कैसा व्यवहार कर रहा है । अत: कहाँ पाप और कहाँ पुण्य हो रहा है; यह सब अपनी सर्वज्ञता से ईश्वर सम्यक्जान लेता है तभी तो वह यथार्थ न्याय कर पाता है । इस लिये यह निश्चित जानो कि कोई भी इस दुनियाँ में ईश्वर के न्याय से कभी बच नहीं सकता ।

ओ३म्

सेवा में,

स्वामी आर्यवेष जी,

प्रधान,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

नई दिल्ली.

"अपनी सँस्कृति अपनाओ"

आर्यावर्त्त, भारतवर्ष एवं इण्डिया तीनों एक ही देश के नाम हैं; वही है हमारा प्यारा देश भारतवर्ष । आर्यों की सँस्कृति-मूलक देश होने से आर्यावर्त्त, आर्य वीर पुत्र भरत की जन्म भूमि होने से भारतवर्ष और इण्डस वैली (सिन्धु-घाटी) की मूल सँस्कृति (सिन्धु-हिन्दु-सँस्कृति) प्रधान देश होने से इण्डिया (हिन्दुस्तान) कहलाया । जब यहाँ कोई अन्य सँस्कृति नहीं थी तब यहाँ केवल और केवल आर्य सँस्कृति ही थी, कालान्तर में वही हिन्दु सँस्कृति कहलाने लगी । अत: भारत मूल के सब निवासी जन्मना हिन्दु/आर्य ही कहलाते थे । जब मत-मतान्तर का विकास होने लगा तब हमारे भाई उससे प्रभावित होकर या किसी परिस्थिति में मजबूर होकर अन्यान्य मजहबों में परिवर्तित होने लगे । इस व्यवहार को लोगों ने "धर्म-परिवर्त्तन" से जानना शुरू किया । धर्म-

परिवर्त्तन तो मत-मतान्तर के लोगों ने शुरु किया न कि हमने । हम तो "अपना घर वापसी" की प्रेरणा देते हुये उन सब के लिये जो विना किसी लालच, जोर-दबाव, अपनी स्वस्थ समझ और स्वेच्छा से अपना घर वापस आना चाहते हैं, अपना द्वार हमेशा खोलकर रखते हैं ।

सबसे पुरानी मूल सँस्कृति वैदिक सँस्कृति/आर्य सँस्कृति ही है जो सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान वेद-ज्ञान की प्राप्ति हुई । स्वयं वेद ही इसका साक्षी है । "सा सँस्कति प्रथमा विश्ववारा"- यह वेद वचन है । अर्थात्यही वैदिक सँस्कति जो आर्य सँस्कृति है; प्रथम है जो विश्व को धारण करती है । जिन्हें चार वेदों का ज्ञान हुआ, वे हैं-अग्नि, वायु आदित्य और अँगिरा । अग्नि को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद और अँगिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान प्राप्त हुआ । इस कारण ही हमारा देश "विश्व गुरु" और ज्ञान-विज्ञान का मूल होने का गौरव प्राप्त कर चुका है । हमें आज भी इसे गौरवान्वित रखना होगा ।

भाइयों-बहनों, आज हमारा देश भारतवर्ष की मूल सँस्कृति खतरे में है । "घर वापसी" का पवित्र आन्दोलन छिड़ा हुआ है । वोटों की राजनीति में कुछ स्वार्थी विधर्मी इसका विरोध कर रहे हैं । संसद्में भी हंगामा कर अवरोध पैदा कर रहे हैं । इस तरह की ही समस्या का हल रुप स्वामी श्रद्धानन्द ने "शुद्धि-आन्दोलन" चलाया था । जब शुद्धि-आन्दोलन जोरों पर था तब हमारे उन भाई-बहनों के लिये बहुत बड़ी राहत थी जो किसी कारण विधर्मी बन गये थे और विना किसी लालच, दबाव व स्वेच्छा से अपने घर वापस आना चाहते थे । जब से शुद्धि-आन्दोलन ठण्डा हुआ, अब तो प्राय: नहीं के बराबर ही है , इसी कारण तब से विधर्मी इस राष्ट्र में बढ़ने लगे

जिससे हमारा भारतवर्ष जो आर्य सँस्कृति/हिन्दु-सँस्कृति से भरा-पूरा था; आज कमजोर होता प्रतीत हो रहा है ।

मित्रों, आज समय आ गया है कि हम फिर से हिम्मत करें और चुप्पी तोड़कर हम याद करें तपस्वी पं लेखराम की कुर्वानी जिन्होंने अपने भाइओं को विधर्मी होने से बचाने के लिये उतर-प्रदेश में चलती रेलगाड़ी से विलम्भ हो जाने के डर से कूद गये और लहुलुहान की स्थिति में उस जगह पर ठीक समय पहुँच गये । अपनी गर्जनापूर्ण भाषण व व्यक्तित्व से उन्हें विधर्मी होने से बचा लिया । यज्ञ व यज्ञोपवीत के द्वारा उन सबको सँस्कारित करके वैदिक उपदेश से आर्य धर्म का महत्त्व बताया, इससे वे सब अपनी पुरानी आर्य सँस्कृति/ हिन्दु-सँस्कृति में ढल गये ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व जुड़ी अन्य सभी सभाओं, आर्य समाजों तथा आर्य संस्थानों से यही कहना है कि अब देश में चलाये जा रहे "घर वापसी" आन्दोलन को सहयोग देने हेतु आर्य समाज फिर से "शुद्धि-आन्दोलन" चलाये और भारतवर्ष की अपनी मूल सँस्कृति को बढ़ाये ।

चुप्पी क्यों ? उठो, जागो और आगे बढ़ो । हम सब साथ हैं ।

आपका अपना ही

डॉ. नरेन्द्र कुमार

प्रधान

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीआर्य समाज वेस्ट मिड्लैंड्स, बर्मिंघम (यू.के.)

The 10 Principles of Arya Samaj

1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.

2. God is existent, formless and unchangeable. He is incomparable, omnisicient, unborn, endless, just, pure, merciful, beginningless, omnipotent, the support and master of all, omnipresent, unageing, immortal, fearless, eternal, and holy, and the creator of the universe. To him alone is worship due.

3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, teach and recite them to others and hear them being read.

4. All persons should always be ready to accept the truth and to give up untruth.

5. All our actions should be according to the principles of Dharma, i.e. after differentiating right from wrong.

6. The primary aim of the Arya Samaj is to do good to the whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.

7. All ought to be treated with love, justice, and according to their merits as dictated by Dharma.

8. We should all promote knowledge (vidya) and dispel ignorance (avidya).

9. One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.

10. In matters which affect the well-being of all people the individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority; in matters that affect him alone he is free to exercise his human rights

Arya Samaj (West Midlands)

Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
- **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
- **Dining hall**
- **Kitchen**
- **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
- **NO Alcohol**
- **Free parking**

For more informatiom call us on
0121 359 7727
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays - Closed

Cost for our services

- Ordinary membership for Arya Samaj - £20 for 12 months.
- Hire of our hall £300 for 6 hours & there after £50 hourly.
- Matrimonial service - £90 for 12 months.
- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest will be £51.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org
Or
Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays – Closed

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge - £90 for 12 months
- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately.**
- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy*

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.
- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.
- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.
- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

Indian Republic Day Celebration

At

Arya Samaj Bhavan
188 Inkerman Street
(Off Erskine Street)
Nechells, B7 4SA

On

Sunday 1st February 2015

Havan – 11am – 12pm

Programme - 12pm – 1.30pm

- **Indian Flag hoisting by Consul General of India & Indian National Anthem**
- **Indian classical & patriotic dance by Dr Jessica's students.**
- **Talk from Acharya Umesh Yadav on contribution of Arya Samaj in Indian Independence struggle and value of 16 Sacraments in human life.**
- **Addresses by Chief Guest & other dignitaries.**

Rishi Langer – 1.30pm (Hot Vegetarian Lunch)

This is a free event, but for catering purposes, please books your place by calling –

0121 359 7727

News

Donations to Arya Samaj West Midlands

1. **Mr. & Mrs. S. Bacon** **£51**
2. **Mrs. Pushpa Bhardwaj** **£21**
   Yajman on 14.12.2014
3. **Mrs. Vibha Cale** **£150**
   Yajman on 21.12.2014
4. **Mrs. Ved Datta** **£10**
5. **Acharya Dr. Umesh Yadav** **£251**
   Yajman on 04.01.2015
6. **Dr. H.M. Verma** **£200**
   Sponsored Havan on 11.01.2015
7. **Mr. J.P. Sethi** **£31**
8. **Mrs. Nirmal Prinja** **£101**
   for Rishi Langar
9. **Mrs. Suhana Narula** **£20**

Donations to Arya Samaj through Priest-Services.

1. **Mr. Vishal Jakhar (Milton Keynes) £101**

   Havan for Grih – praves.
   Many Congratulations to him &
   his all family members.

2. **Mrs. Usha Thaper (Rugby) £51**
   Simantonnayan skr.
   Many Congratulations to her,
   her son & daughter in law.

3. **Dr. Chetan Verma £50**
   Havan on 16th birthday of son
   Kushal.
   Many congratulations to him &
   all family members.

Many-many cordial thanks to all

Yajmans /Sponsors for havans and donors as well.

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**

- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**

- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**

- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 1st February 2015 & 1st March 2015.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org